AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

मगही फागु एंव चैता गीतों में सामाजिक समन्वय

रामनिवास शर्मा
एम.ए.हिन्दी
हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY MEFOR PUBLICATION IN THE JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER.IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BELEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OFSUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OFCONTENTAMENDMENT/ OR ANY TECHNICAL ISSUE WITH NOVISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTEDTHIS PAPER FOR THE PUBLICATION. FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLYHIDDENBY ME OR OTHERWISE, I SHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR ATTHE LAST PAGE OF THIS PAPER/ARTICLE

मगही लोकगीतों में फागुनाहट और चैतार यह दोनों प्रकार के गीत ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे किसी किसान के दो बैल हीरा और मोती, एक का हर्ष खत्म होने से पहले ही दूसरे का उल्लास मिफर से उसी रंग में रंग दे, जैसे पहले के उत्साह में हुआ था। शायद इसीलिए भी फगुनाहट और चैता गीतों का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है जिस प्रकार से वर्ष के 12 मासो में से फागुन और चैत प्राकृतिक के लिए महत्वपूर्ण होता है ठीक उसी प्रकार मगही लोकगीतों में फागुन और चैत मास भी नींव की तरह प्रतीत होता है। फगुनाहट और चैता जैसे गीतों का महत्व उतना ही है जितना मगही लोकगीतो में संस्कार गीतों का होता है।

फागुनाहट और चैता गीतों का साहित्य में वर्तमान समय में भी उसकी परंपरा दृष्टिगत है। संस्कृत से अपभ्रंश से ब्रज, अवधि, बिहारी,

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

गुजराती, राजस्थानी आदि...भारत की विभिन्न बोलियों एवं उपबोलियों के साहित्य की एक विधा आज भी मुखर रूप से देखते को मिलती है।

लोकगीतों में मगही लोकगीतों के साथ–साथ ब्रजभाषा का स्थान भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इस बात का पता तब चलता है जब हम भक्ति काल से निकलते हुए रीतिकाल की ओर चले चलते हैं। जिसमें यह साफ तौर पर देखा जा सकता है कि रीति के कवियो ने भी कृष्ण साहित्य के अंतर्गत फगुनाहट और चैतार जैसे गीतों का उपयोग प्रचुरता के साथ किया है।

रीतिकालीन काव्य में लोकगीतो को कृष्ण काव्य के माध्यम से उनके विषय वस्तु की व्यापकता इतनी अधिक है कि इन दोनो को एक सजीव रूप मिल गया हो, इनके धुन इतने मनमोहक एवं हृदय स्पर्शी होते हैं कि जनमानस इसमें अपना सर्वस्व निछावर करने को आतुर रहता है। इनकी अभिव्यक्ति इतनी जीवंत और मुखर होती है कि भक्त भगवान से साक्षात वार्तालाप कर रहा हो, इसके प्रभाव जनमानस के दिनदैन्य पर एक तिलक के समान सुशोभित प्रतीत होता है।

फागुन का शुरूआत माघ मास के बसंत पंचमी से चैत मास के अंत तक होता है। मगध क्षेत्र का जनजीवन फाग लोकगीतों से सराबोर रहता है। पूरा का पूरा जनमानस होली के माहौल में आनंदित देखने को मिलता है। प्रतिपदा की आधी रात से चैतार गीत का गायन आरंभ हो जाता है।

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

फाग और चैता लोकगीतो में व्यक्ति के मादन भाव को बिल्कुल स्पष्ट और कोमल रूप में प्रस्तुत करता है। विशेषकर फाग का महीना या यूं कहें कि होली का महीना वर्ष के आखिरी महीने के रूप में भी मनाया जाता है, जिसमें लोग अपने खेतों में गेहूं के बाल का जो अपने गर्भ में पूरी तरह से विकसित हो चुका होता है उसे होलिका में पकाकर प्रसाद के रूप में ग्रहण करते है। गेहूं के बाल को पकाकर प्रसाद के रूप में ग्रहण करना यह परंपरा आदिकाल से ही चलती आ रही है। इसमें यह मंतव्य होता है कि साल के पहले दिन और पहली फसल के अनाज को अग्नि में विसर्जित कर या यूं कहं कि प्रथम भोग के रूप में उनहे चढ़ाया जाता है उस प्रसाद को ग्रहरण किया जाता है।

राल्फ विलियम्स के अनुसारः—लोकगीत ना पुराना होता है ना नया वह जंगल के एक वृक्ष के समान है जिसकी जड़े भीतर तक धरती में धंसी हुई है पर जिस में निरंतर नई—नई डालियां पल्लव एवं फल फूल रहते हैं।

लोक साहित्य में वसंत साहित्य का अपना एक अलग ही स्थान जान पड़ता है। चैतार गीतो में हृदयस्पर्शी कोमलता इसकी मधुर धुन और सुरीली तान के लिए अधिक जाना जाता है। चैतार मधुरता और प्रेम रूपी खींचतान के लिए जाना जाता है, जिसका उदाहरण दृष्टव्य है।

गोरी सुरतिया निहारई ये रामा, पिया नहीं अयले।

कजरी कजरवा बहावई ए रामा, पिया नहीं अयले।

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

चईती चनरमा गगनवां में विहंसन–विहंसल मनवा के बागियों ने लहसल।

पूर्वा अचरवा लड़ावई ये रामा, पिया नहीं मिले।

अखियां एक कह दे हई लाजवा के बतिया, मसकई करेजवा टसकई रतिया।

नैना डगरिया निहारी ये रामा, पिया नहीं आईले।

सहकल जवनिया के वहकिल मनवा, दहकल छतिया के लहकल अंगनवा।

नेहिया ई देहिया जगाईव ये रामा, पिया नहीं अयले।

जब से विदेसिया से नेहियां लगावली तडपईत तरसईत रतिया गववली।

जिनगी जवानियां बिसारई ये रामा, पियान्न अयले।

इस गीत के माध्यम से गायन मंडली यह कहना चाहते हैं कि प्रियतमा अ पने गोरी सूरत को निहारते हुए प्रिय से यह कहना चाह रही है कि जब तुम ही मेरे समीप नहीं हो तो मैं इस गोरी सूरत का क्या करूंगी प्रियतमा प्रिय के विरह से तड़प रही है। प्रिया के समीप ना होने के कारण प्रियतमा के नयन लोर से लबालब भरा हुआ प्रतीत हो रहा है

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

मानो ऐसा लग रहा हो जैसे कोई झरना किसी झील को निरंतर भर रही हो और वह बाहर निकलने को आतुर हो प्रिय के वियोग में प्रियतमा के आंसू इस कदर निकल रहे हैं कि उसके काजल भी लगातार आशु के रूप में बह रहे हैं।

चैत के चांदनी आकाश में उसका प्रकाश तो पूरी तरह से बिखरा पड़ा हुआ है परन्तु उस चंद्रमा के प्रकाश का मेरे इस बगिया में नाम मात्र की भी रोशनी नहीं पड़ रही है, ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे पूरी जीवन में अंधेरा ही छाया हुआ है। चैत में चल रहे पुरवइया में मेरा आंचल भी लहरा रहा है मानो वह प्रिय को आवाज दे रहा है कि हे प्रिय जल्दी से मेरे पास आ जाओ पर निष्ठुर प्रिय आने का नाम ही नहीं। लज्जा की बातें मेरे इन नैनों से निर्मल धारा की तरह प्रवाहित हो रही है मेरा हृदय मसक की तरह मचल रहा है पर रात कटने का नाम ही नही ले रहां आंखे प्रिय के आने की राह जोह रही है पर प्रिय है की बिल्कुल निर्मोही हो गए हैं। इस मनोरम गीत में मितवा आगे कहती है कि मेरा यौवन अब मेरे बस में नहीं है ना ही मन मेरे बस में है, मेरे छाती में एक अजीब सी दुख प्रवाहित हो रहा है आंगन ऐसा प्रतीत हो रहा है जैसे वह जल रहा हो। इस शरीर में एक अनकहा स्नेह जगा जा रहा है जब से मेरे प्रिय विदेश गए हैं मानो वही से वह मेरी सौतन को लेकर आएंगे और विदेश से ही उन्हें प्रेम हो गया है। इन बातों को सोच सोच कर मैं अंदर ही अंदर तड़प रही हूं तरस रही हूं कि हे प्रिय मेरे पास आ जाओ और इस तड़पन और इस तरसन में रात भी अब

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

बीतने को मुश्किल है। यह यौवन जो मैंने प्रिय के नाम किया था वह यूं ही जीवन के इस भाग दौड़ में बिखर गई है परंतु एक प्रिय हैं जो आने के नाम ही नहीं लेते। इस गीत में योगिनी की बहुत ही विदग्ध अवस्था का मार्मिक चित्रण किया गया है।

चैता गीत का एक और भी नाम जाना जाता है जिसे घाटों के नाम से हम पुकारते तहैं। घाटू गीत में हमे कहीं–कहीं नर्तक और नर्तकी के साथ भी नृत्य करते हुए गायन का परंपरा देखने को मिलता है यहां मगध के क्षेत्र मं प्रचलित फागु और चैता लोकगीतो को बहुत ही व्यापक रूप में देखने को मिलता है। फगुना और चैता गीतो से हमें आम जनमानस के भाव सौंदर्य और कला सौदर्य का पता चलता है। इससे हमें यह पता चलता है कि फाग गायन के दरमियान समाज के कुछ लोग आपस में बैठकर अपने भाव को अपने कला को किस प्रकार से एक दूसरे के समक्ष प्रस्तुत करते हैं और वह आपस में किसी भी परिस्थिति में जुड़े रहना चाहते हैं।

डॉ सतेंद्र के अनुसारः–वह गीत जो लोग मानस की अभिव्यक्ति को अथवा उनमें लोकमानस भाव भी हो लोकगीत के अन्तर्गत आता है।

जिस तरह से भारतीय परंपरा में किसी भी कार्य को करने से पहले अपने आराध्य की पूजा अर्चना की जाती है ठीक उसी तरह फागू या होली प्रारंभ करते समय मगध में यह गीत अवश्य गाया जाता है।

सुमेराहूं श्री भगवान अरे लाला सुमिरहूं श्री भगवान हो.....

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

अहो जेही जेही सुमिरन सब काम बनाते हैं सुमिरहूं श्री....

पुरब में सुमिरहूं उगता सूरज देव उगात सूरज देव

पश्चिम में चीर चुल्तान अरे लाला सुमरेहूं श्री भगवान

उत्तर में सुमिरहूं उत्पति गंगा दक्षिण में सुमेरहूं हनुमान

नीचे में सुमिरहूं धरती धारा धन ऊपर सुमिरहूं भगवान।

गया में सुमिरहूं गया गजाधर काशी विशेश्वर नाथ

जेही सुमिरत सब काम बनता है सुमिरहूं श्री भगवान हो।

अर्थातः—यह सुमिरन, देव सुमिरन इसे देव स्मरन गीत भी कहा जाता है। सुमिरन का गीत होली में खास तौर पर आरंभ में गाया जाता है या कहीं कहीं यह गायन निर्विघ्न की समाप्ति भी होता है। आदिकाल से यह परंपरा चलती आ रही है, कि फागुन मास में जब फागुन के आखरी दिन जब होलिका दहन होता है तो उसके मध्यरात्रि से ही होली आरंभ हो जाता है और इसी के परंपरा में गायक मंडली ढोल, झाल, करताल, डफली आदि वाद्य यंत्रो के साथ यह समूह बनाकर गांव के हर घर के दरवाजे पर जाते हैं और वहां आए हुए कुटुंब का स्वागत गान करते हैं। यह परंपरा समाज को एक दूसरे से जोड़े रखता है और इस परंपरा के अन्तर्गत गायन मंडली आदि वाद्य यंत्रो का उपयोग कर सिरे वर्तमान का लाभ करते हैं जिसमें सर्वप्रथम यह गीत भगवान की चौखट पर और उसके बाद जिस किसी के भी घर पर जाते हैं, वहां

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

गाया जाता है इस गीत में होली उस घर में रहने वाले बड़े बुजुर्गों महिलाओं वहां आए हुए कुटुंब बालको एवं समस्त जीवो का आने वाले जीवन के लिए मंगल कामना करते है, इस गायन के माध्यम से गायन मंडली अपना भाव इस रूप में प्रस्तुत करना चाहते हैं कि आइए हम सब श्री भगवान का स्मरण करते हैं। जिनके स्मरण मात्र से ही सारे कार्य पूर्ण हो जाते है। हम स्मरण पूर्व में उगने वाले उन सूर्य देवता का भी करते हैं और पश्चिम में हमेशा रहने वाले सुल्तान का भी करते हैं जो हमारे मंगल कामना के प्रतीक हैं। हम ऊतर दिशा में हिमालय और गांगा का भी स्मरण करते हैं तथा दक्षिण में हनुमान जी का स्मरण करते हैं जो हमें हमेशा विपदा से बचाए रखते हैं। हम जिस धरती पर विराजित हैं उनको भी नमन करते हैं और ऊपर जो भगवान हमारी रक्षा करते हैं हम उनको भी स्मरण करते हैं जो हमारे पालनहार हैं। आगे गायन मंडली कहती है कि हम गया में विराजित गजाधर को भी नमन करते हैं और काशी में विराजित विशेश्वर नाथ को भी हम नमन करते हैं जो इस पूरे सृष्टि के पालनहार के रूप में जाने जाते है और इसी तरह हम उन सभी समस्त देवी देवताओं को करते हैं और काशी में विराजित विशेश्वर नाथ को भी हम नमन करते है जो इस पूरे सृष्टि के पालनहार के रूप में जाने जाते है और इसी तरह हम उन सभी समस्त देवी देवताओं को करते हैं जो हम सब की रक्षा करते हैं हमारे सारे कार्य को सिद्ध करते हैं और हमें विपदाओं से बचाए रखते हैं।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

आगे चलते हुए हम यह देख सकते है कि फाग और चेता गीतो में राम और कृष्ण का प्रचुर मात्रा में वर्णन मिलता है। एक और जहां चैता में किसी भी मुखड़े के अंत 'रामा' शब्द से होता है तो वहीं दूसरी ओर फाग में कृष्ण और राम दोनों का वर्णन होता है। फाग गीतों में कृष्ण और राम का वूर्णन इस रंग रूप में किया जता है। जैसे पूरे सृष्टि में अगर किसी ने होली खेली हो तो केवल इन्हीं दो देवताओं ने खेली हो क्योंकि पूरा का पूरा फाग और चैता इन्हीं को समर्पित किया जाता है जैसे अगर हम एक मुखड़े पर ध्यान दें तो उनके शब्द इस प्रकार है कि "होली खेले रघुवीरा अवध में होली खेले रघुवीरा" इन पंक्तियों से हमें यह जानने को मिलता है की फाग और चैत मास का पूरा का पूरा समागम राम और कृष्ण के ऊपर है। आगे हम इसी तरह का एक और उदाहरण देख सकते हैं जिसमें कृष्ण के क्रीडा का बहतुत ही उत्तम उदाहरण दिया गया है

लड़ीका हो गोपाल कूद पड़े जमुना मे

जमुना में कूदे काली नाग नाथे अहो फन पर भय असवार।

कूद पड़े जमुना में लड़ीका हो गोपाल कूद पड़े जमुना में।

इस फागू गीत के माध्यम से गायन मंडली यह बताना चाहते हैं कि किस प्रकार बालकष्ण खेलते खेलते यमुना नदी में कूद पड़ते है और यमुना नही में रह रहे कालिया नाग को अपने वश में कर लेते है और उसे नाथ देते हैं और नाथने के बाद उसके फन का सवार हो जाते हैं

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

अर्थात गायन मंडली इस फागुन गीत के माध्यम से यह बताना चाह रही है कि बालकृष्ण कितने शक्तिशाली हैं और इन्हीं के सामन उस घर का जो बालक है वह भी शक्तिशाली हो और उसका जीवन श्रीकृष्ण की तरह ही समृद्ध हो (यह कथा कालिया नाग नाथन की कथा पर आधारित है)। आगे चलते हुए हम यह देख सकते हैं कि फाग और चैता गीतों में राम और कृष्ण का प्रचुर मात्रा में वर्णन मिलता है एक और जहां चैता में किसी भी मुखड़े का अंत रामा शब्द से होता है तो वहीं दूसरी ओर फाग में कृष्ण और राम दोनों का वर्णन होता है। सात गीतों में कृष्ण और राम का वर्णन इस रंग रूप में किया जाता है जैसे पूरे सृष्टि मं अगर किसी ने होली खेली हो तो केवल इन्हीं दो देवताओं ने खेली हो क्योंकि पूरा का पूरा फाग और चेता इन्हीं को समर्पित किया जाता है जैसे अगर हम एक मुखड़े पर ध्यान दें तो उनके शब्द इस प्रकार हैं कि 'होली खेले रघुवीरा अवध में होली खेले रघुवीरा' इन पंक्तियों से हमें यह जानने को मिलता है की सा और चैत मास का पूरा का पूरा समागम राम और कृष्ण के ऊपर है। आगे हम सभी तरह का एक और उदाहरण देख सकते हैं जिसमें कृष्ण के क्रीडा का बहुत ही उतम उदाहरण दिया गया है।

डॉक्टर रामनरेश त्रिपाठी के अनुसारः— लोकगीतो को ग्राम में गीत कहा गया है उनके अनुसार इसमें अलंकार नहीं केवल रस है, छंद नही केवल लाए हैं, लालित्य नहीं केवल माधुर्य है, सभी मनुष्य अर्थात स्त्री

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

पुरूष के मध्य में हृदय नामक आसन पर बैठकर प्रकृति गान करती है, प्रकृति के ही गान ग्राम में गीत है।

अब हम एक अन्य फागुन गीत का उदाहरण लेते हैं जिसमें जनकपुर मैं सीता के द्वारा गौरी पूजन की परंपरा को दिखाया गया है या यू कहे कि बताया गया है

गौरी पूजन जात कुमारी,

अक्षत चंदन बेल के पाती भरी कंचन लिए थारी

सब सखियां ने मिली झुंड बांध के गावथी मंगलाचारी

मनदिलवा में पहुंचे प्यारी गौरी पूजन जाति कुमारी

पूजा करत मनावत बहू विधि विनती करत कर जोरी,

पूजा करत सिया निकले मंदिर से देखने गए फुलवारी,

उहवा देखल दशरथ जी कं नंदन, राम लखन दोनों भाई,

बाग बीच फिरत फिरौरी। गौरी पूजन जाति कुमारी।

अर्थात इस फाग गीत के माध्यम से गायन मंडली यह प्रस्तुत करना चाह रही है कि किस प्रकार कुंवारी सीता गौरी की पूजा अर्चना के लिए अपने थान में अक्षत, चंदन, बेलपत्र, आदि सामग्री भरे हुए है और सभी सखियों के संग एकत्रित होकर एक समूह बनाकर मंगल गीत गाती हुई मंदिर में पहुंचते हैं। मंदिर पहुंचने के बाद कुंवारी सीता पूजा

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

करते समय मां गौरी की आराधना करती है और प्रार्थना करती हैं कि उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो। पूजा के बाद सीता मंदिर परिसर से बहार निकलते हुए फुलवारी देखने लगती है जहां दशरथ जी के पुत्र राम और लक्ष्मण को उस फुलवारी में विहार करते हुए देखती हैं।

अब जब गायन मंडली विभिन्न प्रकार के गीतों से उस घर में रह रहे कुटुंब परिवार आदि की समृद्धि और खुशहाली की मनोकामना करने के बाद जब वहां से उनको चलना होता है तब जिस प्रकार किसी शुभ कार्य को करने से पहले प्रभु का सुमिरन किया जाता है ठीक उसी प्रकार किसी दरवाजे से चलते समय या विदा लेते समय एक विदाई गान के रूप में गाया जाने वाला गीत इस प्रकार है जिसमें गायन मंडली जाते–जाते भी उस परिवार को जो उस चौखट के अंदर रह रहे उन सभी सदस्यों के समृदधि की कामना करते हुए जाता है और कहता है कि

सदा आनंद रहे यही द्वारे मोहन होली हो,

एकबर खेले दोबर कन्हैया तेवर राधा गोरी हो

श्री कृष्ण जब पिम्हा मारे झूले राधा प्यारी हो

सदा आनंद रहे यही द्वारे मोहन खेले होली हो

अर्थात इस फाग गीत को सुनते ही हमारे मन में बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार मंडली इस गीत के द्वारा यह कहता है कि

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

इस द्वार पर सदा आनंद बना रहे और मोहन होली खेलते रहे यहां मोहन से तात्पर्य है कि उस घर में जो नवविवाहित जोड़ा हो या कोई छोटा बाल गोपाल हो वह सदा खुश रहे और यूं ही आंगन उनसे चहचहाते रहे, अगर एकबर ग्वाल बाल और उससे दुगना श्री कृष्ण और तिगुना राधा गोरी खेलते रहे अर्थात मंडली यह कहना चाह रही है कि अगर हम समाज की खुशी एक गुना हरे तो कृष्ण की खुशी अर्थात उस कुटुंब की या उस बालक की खुशी दोगुना रहे और उससे भी तन गुणी रहे राधा प्यारी की खुशी जो बालिका या बहू या बेटी के रूप में उस घर में विराजित हैं। आगे गायन में मंडली यह बताती है कि जब श्री कृष्ण झूला पर पिम्ह मारते हैं अर्थात उसे आगे की ओर धक्का देते हैं तब राधा प्यारी खुशी से झूमती हुई उस झूला पर झूलते रहती हैं और अंततः गायन मंडली उस दरवाजे पर जाते जाते यह कामना करती है कि इस दरवाजे पर सदा आनंद विराजमान रहे इस गायन के बाद गायक मंडली दूसरे दरवाजे पर चली जाती।

गायन की यह परंपरा एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक तब तक चलती रहती है जब तक गायन मंडली उस गांव के हर एक दरवाजे तक अपना आशीष ना पहुंचा दे।

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि फाग और चैता गीतों में समाज का समन्वय इस प्रकार है जिस प्रकार एक व्यक्ति के शरीर में खून और एक पेड़ के अंदर मजबूत साख का होता है। सामाजिक समन्वय और सामाजिक सरोकार से यह तात्पर्य है कि समाज भले ही आपस में

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

कितना भी लड़े झगड़े पर जब भी कोई विपति आए तब आपस में मिलजुल कर साथ रहे और जीवन का निर्वहन इसी प्रकार ताउम्र चलता रहे। समाज का मतलब ही होता है कि हर सुख–दुखा में एक दुसरे का साथ देना और एक दूसरे से कंधे से कंधा मिलकर चलते रहना। फागुन में आने वाले होली का त्यौहार सामामिजक समन्वय का सबसे जीवंत उदाहरण है इस त्यौहार से बहुत ही स्पष्ट रूप से भारतीय संस्कृति में देखा जाता है कि कोई व्यक्ति अगर अपने घर से सुदूर भी रह रहा हो अपनी रोजी–रोटी की तलाश में। जब भी होली का त्यौहार जिसमें घर वापस जाकर रहता है और अपने समाज, अपने परिवार के साथ वक्त बिताता है। फाग और चैत प्राकृतिक संपदा के नजरिए से भी बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है इ न माहों में हम यह देखते हैं कि जब बसंत का मौसम आता है तो सारे पुराने पते झड़ जाते हैं और उन पर नई पत्तियां आती हैं। यह उस अच्छाई और बुराई का भी प्रतीक है कि अगर आप अपने जीवन में पाप कर्म किए हो तो उसे अब छोड़ने का समय है और आने वाले नए साल में एक अच्छे कर्म करने का संकेत देता है। जैसे कि हम सभी जानते हैं की बसंती साहित्य में चैत और फाग अपनी कोमलता, मधुरता और सुरीली आवाज के लिए प्रसिद्ध है। एक ओरा जहां फागुन मास हिन्दु वर्ष के आखिरी मास के रूप में जाना जाता है और यह मास अपने आप में होली के हर्ष और उल्लास को समेटे हुए एक वर्ष को विदा करता है वही दूसरी ओर चैत तक नए उजाला, प्रेम सद्भावना आदि के रूप में एक नए

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

वर्ष का स्वागत करता है। फागुन का महीना मगध के लोक जीवन में प्रेम को प्रफुल्लित करता हुआ समाज में हर उस संबंध को संजोए रखता है जो एक दूसरे से कभी कभार भी मिल पाते हैं और होली का एक बहुत ही प्रचलित यह पंक्ति जो हर कोई जानता है कि "बुरा ना मानो होली है" के साथ एक दुसरे से मिलन करते हैं और अपनी खुशियों को एक दुसरे के साथ बाटते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. उमांशंकर भट्टाचार्य की कहावत (1919)
2. जय नाथ पति और महावीर सिंह कृतः मगही मुहावरा बुझौवल (1928)
3. डॉ विश्वनाथ प्रसाद कृतः मगही संस्कार गीत (1965)
4. संपत्ति आर्यन कृतः मगही लोक साहित्य (1996)
5. संपत्ति आर्यन कृतः मगही लोक साहित्य(1965)
6. डॉक्टर राम प्रसाद सिं कृतः मगही लोकगीत के संग्रह(1998)
7. इनामुल हक कृतः मगही लोक गाथाओं का साहित्यिक अनुशीलन (2006)
8. डॉ श्रीकांत शास्त्री एवं डॉ रामानंद कृतः मगही लोकगीत एवं सेंशन
9. मथुरा प्रसाद सिंह एवं रामेश्वर महतो कृतिः मगही बाल गीत
10. विश्वनाथ प्रसाद कृतः मगही संस्कार गीत
11. संत राम नगीना सिंह कृतः मगहिया गीत

AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN:2320-3714
Volume 2 Issue 1
April 2023
Impact Factor: 11.9
Subject Hindi Literature

12.श्री नंदन शास्त्री कृतः अप्पन गीत

13.रामदास आर्य कृतः गीत आदमी के आदि।

Author's Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments /updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally I have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and the entire content is genuinely mine. If any issue arise related to Plagiarism/Guide Name/ Educational Qualification/Designation/Address of my university/college/institution/ Structure or Formatting/ Resubmission / Submission /Copyright/ Patent/ Submission for any higher degree or Job/ Primary Data/ Secondary Data Issues, I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or donot submit the copy of my original documents (Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Address Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that as the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper may be removed from the website or the watermark of remark/actuality may be mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

रामनिवास शर्मा

*****